नईदुनिया

आरपीपी के प्रदर्शन से पहले पूर्व राजा ज्ञानेन्द्र शाह के साथ राजशाही पक्षधर नेताओं की डिनर मीटिंग

काठमांडू

रविवार को राजशाही के पक्ष में होने वाले प्रदर्शन से ठीक पहले पूर्व राजा ज्ञानेन्द्र शाह ने अपने निकट नेताओं के साथ शनिवार को डिनर मीटिंग की है। निषेधित क्षेत्र तोड़ने की घोषणा से ठीक एक दिन पहले पूर्व राजा के साथ इन नेताओं की बैठक काफी अहम मानी जा रही है।

शनिवार की देर शाम को पूर्व राजा ज्ञानेन्द्र शाह के काठमांडू स्थित निर्मल निवास में राष्ट्रीय प्रजातंत्र पार्टी (आरपीपी) के सात शीर्ष नेताओं के साथ डिनर मीटिंग हुई है। पूर्व राजा के घर पर डिनर मीटिंग पर मिलने वाले नेताओं में आरपीपी के अध्यक्ष राजेन्द्र लिंगदेन, पशुपति शमशेर राणा, प्रकाशचंद लोहनी, विक्रम पांडे, ध्रुव बहादुर प्रधान, बुद्धिमान तमांग और ज्ञानेन्द्र शाही मौजूद रहे।

इस बैठक के बाद आरपीपी के सांसद ज्ञानेन्द्र शाही ने निर्मल निवास में पूर्व राजा के साथ हुई बैठक होने की बात स्वीकार की। उन्होंने कहा कि राजसंस्था पुनर्स्थापना को लेकर रविवार से फिर से शुरू होने वाले प्रदर्शन को लेकर चर्चा हुई। साथ ही राजसंस्था समर्थक संगठनों और राजनीतिक दलों के बीच कुछ बातों को लेकर मतभेद पर भी चर्चा हुई।

पूर्व राजा ज्ञानेन्द्र शाह के साथ आरपीपी नेताओं की यह डिनर मीटिंग ऐसे समय हुई, जब इस पार्टी की केंद्रीय समिति की बैठक ने अपनी पार्टी के अलावा अन्य किसी भी राजसंस्था समर्थित संघ संस्था या अभियान से जुड़ने पर प्रतिबंध लगाने का फैसला किया था। शुक्रवार को आरपीपी ने अपने पार्टी के सभी पदाधिकारियों पर राजसंस्था समर्थित किसी अन्य संघ संगठन या अभियान में शामिल होने पर रोक लगा दी है।

माना जा रहा है कि पूर्व राजा द्वारा आरपीपी पार्टी के भीतर कुछ नेताओं को अलग से संघर्ष की जिम्मेदारी दिए जाने से जो नाराजगी थी, उसी पर चर्चा करने के लिए पूर्व राजा ज्ञानेन्द्र ने यह डिनर मीटिंग बुलाई थी। एक तरफ आरपीपी के तरफ से रविवार को काठमांडू में निषेधित क्षेत्र को तोड़ कर प्रदर्शन करने की घोषणा किया जा चुका है, वहीं दूसरी तरफ सरकार के तरफ से आरपीपी को ऐसा नहीं करने की चेतावनी भी दी जा चुकी है।

न्यूज ब्रीफ

अमेरिकी गृह विभाग के खिलाफ भारतीय व चीनी छात्रों ने दायर की कोर्ट में याचिका

वाशिंगटन। अमेरिका द्वारा एफ-1 स्टूडेंट वीजा स्टेट्स रद्द करने से वहां पर पढ़ रहे छात्रों का गुस्सा चरम पर है। स्टूडेंट बीजा रद्द करने के खिलाफ भारत के तीन और चीन के दो छात्रों ने अमेरिका के गृह विभाग और इमिग्रेशन अफसरों के खिलाफ न्यू हैम्पशायर की डिस्ट्रिक कोर्ट में याचिका दायर की गई है। छात्रों का आरोप है कि गैरकानूनी तरीके से अचानक बीजा रद्द करने से उन्हें बीच में ही पढ़ाई छोड़कर जाना पड़ेगा। अमेरिकन सिविल लिबर्टीज यूनियन के मुताबिक याचिका दाखिल करने वाले भारत के छात्र लिंकिथ बाबू गोरेला, धनुज कुमार गुम्माडावेली व मणिकंता पासुला और चीन के हैंगरुई झांग व हाओयांग शामिल हैं। छात्रों की ओर से याचिका में कहा गया है कि एफ-1 स्टेट्स समाप्त होने के कारण छात्र न केवल अवैध प्रवासी की स्थिति में आ गए हैं, बल्कि उन्हें डिटेंशन, डिपोर्टेशन के साथ ही शिक्षा के संकट का भी सामना करना पड़ेगा। अब वह अपनी डिग्री पूरी नहीं कर पाएंगे और ना ही वह ग्रुजेएशन के बाद दी जाने वाली ट्रेनिंग में हिस्सा ले सकेंगे। छात्रों के वकीलों का तर्क है कि अमेरिकी सरकार ने वीजा स्टेट्स खत्म करने से पहले जरूरी नोटिस या सूचना नहीं दी।

चीन में रोबोट्स ने इंसानों के साथ लगाई 21 किमी की दौड़

बीजिंग । चीन की राजधानी बीजिंग में दुनिया की पहली इंसान और रोबोट के बीच हाफ मैराथन हुई। लोगों के साथ 21 रोबोट्स ने 21 किलो मीटर की दौड़ लगाई। इसे देखने को लिए लोगों के अंदर खासा उत्साह देखा गया। यह अजब-गजब दौड़ बीजिंग के दक्षिण-पूर्वी यिझुआंग जिले में शनिवार को हुई।इस दौड़ का मकसद रोबोटिक्स और टेक्नोलाजी की दुनिया में चीन की तरक्की दिखाना था। चीन की नोएटिक्स रोबोटिक्स और ड्रायडअप कंपनियां के रोबोट्स का साइज 120 सेंटीमीटर से कम था। जबकि कुछ का साइज 1.8 मीटर लंबा था। खास बात यह रही कि रोबोट ने 2.40 घंटे में दौड़ को पूरा किया, जबकि इंसानों ने इसे एक घंटे में इसे पूरा कर लिया। रोबोट्स के साथ इंसानी ट्रनेर भी थे, जिन्होंने दौड़ के दौरान उन्हें सहारा भी दिया। रोबोटिक्स सेंटर के चीफ टेक्नालाजी अफसर तांग जियान ने बताया कि चीन में दस हजार कमर्चारियों पर 470 रोबोट हैं। रोबोट्स ने मैराथन में बेहतर प्रदर्शन किया।

आंखें नहीं मिलीं, एक दूसरे को देखा भी नहीं, फिर भी 4 घंटे तक होती रही बहस

रोम। यहां एक बैठक ऐसे हो गई जिसमें एक दूसरे का चेहरा देखे बगैर ही बहस होती रही है। ये दोनों देश हैं ईरान और अमेरिका जिनके बीच परमाणु हथियारों को लेकर जारी तनातनी के बीच एक अहम बातचीत रोम में हुई, लेकिन जरा हटकर। दोनों देश के प्रतिनिधिमंडल एक ही दूतावास में थे, पर अलग-अलग कमरों में। वो न तो आमने-सामने हुए और न ही एक-दूसरे का चेहरा देखा। बीच में थे ओमान के विदेश मंत्री, जो एक कमरे से दूसरे कमरे तक संदेश पहुंचाते रहे। बातचीत का असली पेंच अब भी वहीं फंसा है। क्या ईरान को शांतिपूर्ण नागरिक परमाणु कार्यक्रम जारी रखने दिया जाएगा, या उसे अपने पूरे परमाणु ढांचे को खत्म करना होगा ईरान का कहना है कि उसका परमाणु कार्यक्रम पूरी तरह से शांतिपूर्ण है और वो बिजली उत्पादन और चिकित्सा के लिए यूरेनियम संवर्धन कर रहा है। वहीं पश्चिमी देशों, खासकर अमेरिका को शक है कि ईरान धीरे-धीरे परमाणु बम बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। हाल ही में अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी के प्रमुख राफेल ग्रासी ने कहा था कि ईरान अब परमाणु हथियार हासिल करने से बहुत दूर नहीं है। ग्रासी भी शनिवार को रोम में थे और उन्होंने इटली के विदेश मंत्री से मुलाकात की।डोनाल्ड ट्रंप ने दोबारा राष्ट्रपति बनने के बाद फिर से ईरान पर अधिकतम दबाव की नीति लागू की है। लेकिन साथ ही उन्होंने मार्च में ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई को एक पत्र लिखकर बातचीत की पेशकश भी की। उन्होंने यह भी कहा, मैं बल प्रयोग करने की जल्दी में नहीं हूं, लेकिन अगर बात नहीं बनी तो सैन्य विकल्प खुला है। हालांकि दोनों ने इस वार्ता को रचनात्मक बताया है और अगले सप्ताह फिर से बातचीत करने की बात कही है।शनिवार को रोम स्थित ओमान के दूतावास में ये बातचीत करीब चार घंटे तक चली, जिसमें ईरान की ओर से विदेश उपमंत्री अब्बास अराकची और अमेरिका की ओर से राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के खास दूत स्टीव विटकॉफ की टीम शामिल थी। विटकॉफ एक अरबपति रियल एस्टेट कारोबारी हैं, जिन्हें ट्रंप ने कई विदेशी मिशनों पर भेजा है।

ईरान और अमेरिका ने परमाणु समझौते के लिए रूपरेखा तैयार करने का काम विशेषज्ञों को सौंपा

दुबई

ईरान और अमेरिका ने शनिवार को एक संभावित परमाणु समझौते की रूपरेखा तैयार करने के लिए बातचीत की अगली जिम्मेदारी विशेषज्ञों को सौंपने पर सहमति जताई है। यह जानकारी ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराकची ने राज्य टीवी को दी।

यह बैठक रोम में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के मध्य पूर्व मामलों के विशेष दूत स्टीव विटकॉफ के साथ ओमानी मध्यस्थ के माध्यम से हुई। यह दोनों पक्षों के बीच एक हफ्ते में दूसरी अप्रत्यक्ष वार्ता थी, जिसमें चार घंटे तक बातचीत चली।

अराकची ने कहा कि बातचीत उपयोगी और रचनात्मक माहौल में हुई। उन्होंने बताया, हम कुछ बुनियादी सिद्धांतों और लक्ष्यों पर प्रगति कर पाए हैं और बेहतर समझ पर पहुंचे हैं। अब तय किया गया है कि बुधवार को ओमान में विशेषज्ञ-स्तरीय बैठकें शुरू होंगी, जहां संभावित समझौते की रूपरेखा तैयार करने का कार्य आरंभ होगा।

उन्होंने यह भी कहा कि अगले शनिवार को मुख्य वार्ताकार पुन: ओमान में मिलेंगे, ताकि विशेषज्ञों के काम की समीक्षा की जा सके और यह परखा जा सके कि वह संभावित समझौते के सिद्धांतों से कितना मेल खाता है।

इस दौरान, अराकची ने ईरानी सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई की हालिया टिप्पणी को दोहराते हुए कहा, हम अत्यधिक आशावादी नहीं हैं, न ही अत्यधिक निराशावादी। हम बहुत सतर्कता के साथ आगे बढ़ रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने 2018 में 2015 के ईरान परमाणु समझौते से अमेरिका को बाहर कर लिया था और अब उन्होंने ईरान को चेतावनी दी है कि यदि नया समझौता शीघ्र न हुआ तो सैन्य कार्रवाई हो सकती है। ट्रंप ने हाल ही में कहा, मैं बस इतना चाहता हूं कि ईरान परमाणु हथियार न बनाए। वे महान और समृद्ध हो सकते हैं, लेकिन हथियार नहीं होने चाहिए।

वहीं, ईरान पहले से कहता आ रहा है कि वो अपने यूरेनियम संवर्धन कार्यक्रम को पूरी तरह खत्म करने, अपने सेंटरफ्यूज को हटाने या संवर्धित यूरेनियम के भंडार को 2015 की सीमा से कम करने के लिए तैयार नहीं है। हालांकि ईरान ने यह जरूर साफ किया है कि उसका परमाणु कार्यक्रम पूरी तरह शांतिपूर्ण है और वो कुछ सीमित प्रतिबंधों के बदले अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों से राहत चाहता है।

शिविरों पर इजरायली हमले में 90 से ज्यादा मौत, मृतकों में ज्यादातर बच्चे शामिल

गाजा। गाजा पर हमलों का आलम यह है कि गुड फ्राइडे से पिछले दो दिनों में इजरायली हमलों से कम से कम 92 फिलिस्तीनियों की मौत हो चुकी है। स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, इन हमलों में 219 से अधिक लोग घायल हुए हैं और दर्जनों अब भी मलबे के नीचे या दुर्गम इलाकों में फंसे हैं। मरने वालों में अधिकतर महिलाएं और बच्चे शामिल हैं। रिपोर्ट के अनुसार, खान यूनिस में रातभर चले हवाई हमले में कम से कम 15 बच्चों की मौत हुई। सभी बच्चे टेंटों में सो रहे थे। वहीं राफा में एक अलग हमले में एक मां, उसकी बेटी और दो अन्य की जान चली गई। शवों को यूरोपियन अस्पताल में लाया गया। उधर, हमास ने इजरायल के अस्थायी युद्धविराम प्रस्ताव को ठुकरा दिया है। हमास का कहना है कि वह स्थायी संघर्षविराम और कैदियों की रिहाई के बदले में समग्र समझौता चाहता है, न कि केवल अस्थायी राहत। इजरायली हमलों के बावजूद हमास अपनी जिद छोड़ने को तैयार नहीं है।हमास के इस इनकार के बाद इजरायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने शनिवार को स्पष्ट कर दिया कि जब तक हमास हमारे प्रस्तावों को नहीं मानता, युद्ध बंद नहीं होगा। गाजा में सैन्य कार्रवाई पूरी ताकत से जारी रहेगी। उनका यह बयान इजरायल की ओर से गाजा में बड़े 'सुरक्षा ज़ोन'कब्जाने और 18 महीने लंबे युद्ध को और तेज़ करने की प्रतिबद्धता को दोहराता है। स्थानीय लोगों के हवाले से अलजजीरा ने बताया, गाजा में कोई भी अब खुद को सुरक्षित नहीं मानता, न अपने घरों में, न टेंटों में, न ही कैंपों में। हर रात लोगों के लिए मौत और भय का वक्त बन चुकी है। गौरतलब है कि 18 मार्च को युद्धविराम खत्म होने के बाद इजरायल ने गाजा में खाद्य, ईंधन और राहत सामग्री पर पूरी तरह रोक लगा दी है। वहीं दूसरी तरफ युद्धविराम पर एक बार फिर लंबा और अनिश्चितकालीन ब्रेक लग गया है। इजरायली पीएम बेंजामिन नेतन्याहू ने हमास आतंकियों पर सीजफायर वार्ता तोड़ने का आरोप लगाते हुए गाजा को अंजाम भुगतने की धमकी दी। नेतन्याहू के आदेश पर इजरायली सेना गाजा पर जबरदस्त कहर बरपा रही है।

जबड़े में थी समस्या, डॉक्टर भी ठीक नहीं कर पाए, चैट जीपीटी की सलाह ने दिलाया आराम

लंदन

एक व्यक्ति के जबड़े में क्लिकिंग की समस्या थी। कई डॉक्टरों को दिखाया और कई तरह के टेस्ट किए गए लेकिन फायदा बिलकुल नहीं हुआ। इसके बाद इस समस्या का समाधान चैट जीपीटी से पूछा गया तो उसने सटीक जानकारी दी। इस पर अमल करने पर काफी कुछ फायदा हो गया है। लिंक्डइन के को-फाउंडर रीड हॉफमैन ने एक वायरल रेडिफ पोस्ट को शेयर किया है, जिसमें एक यूजर ने दावा किया कि चैटजीपीटी ने पांच साल पुरानी मेडिकल कंडीशन को एक मिनट से भी कम समय में ठीक करने में उनकी मदद की है। पोस्ट के अनुसार रेडिट यूजर को लगातार जबड़े में क्लिकिंग होती थी, जिसकी वजह शायद मुक्केबाजी के दौरान लगी की चोट थी। एक यूजर के डॉक्टर चैटजीपीटी से नफरत करेंगे क्योंकि यह वेबएमडी से 1000 प्रतिशत अधिक उपयोगी है वाले कॉमेंट पर हॉफमैन ने असहमति जताई। हॉफमैन ने कहा, मुझे यकीन नहीं है कि वे इससे नफरत करेंगे। अगर सही तरीके से लागू किया जाए तो एआई डॉक्टरों को हर मरीज की बीमारी को तेजी से डायग्नोस करने, कम पेपरवर्क और एक दिन में अधिक मरीजों को देखने में मदद कर सकता है। मेडिकल एक्सपर्ट प्रोफेशनल डायग्नोसिस के विकल्प के रूप में एआई टूल्स के यूज को लेकर आगाह करते आ रहे हैं। वहीं, इस रेडिट पोस्ट ने इस बहस को और हवा दे दी है कि कैसे एआई डेली हेल्थ एडवाइस और सप्लीमेंट क्लिनिकल केयर को बदल सकता है। यूजर ने कहा कि ईएनटी स्पेशलिस्ट को दिखाने, दो एमआरआई करवाने और मैक्सिलोफेशियल स्पेशलिस्ट को दिखाने के बाद भी समस्या का समाधान नहीं हुआ। निराश होकर यूजर ने बीमारी के समाधान के लिए चैटजीपीटी को ट्राई करने का फैसला किया। एआई ने यूजर को बताया कि उनके जबड़े की डिस्क थोड़ी डिस्लोकेट लेकिन मूवेबल हो सकती है। चैटजीपीटी ने यूजर को सलाह दी कि वे जीभ की प्लेसमेंट और सिमेट्री से जुड़ी माउथ-ओपनिंग तकनीक को ट्राई करें। यूजर ने लिखा, मैंने चैटजीपीटी के निर्देशों का पालन अधिकतम एक मिनट तक किया और अचानक कोई क्लिक नहीं हुआ।

धीरे-धीरे अपनी ही मौत की ओर बढ़ता गया ग्रह, वैज्ञानिक हैरान

अमेरिका के खगोलविदों ने अंतरिक्ष में चौंकाने वाली घटना देखी है, जो एक तारे और उसके ग्रह के साथ घटित हुई। इस घटना में ग्रह धीरे-धीरे अपनी ही मौत की ओर बढ़ता गया और अंतत: तारे में समा गया। यह घटना न केवल खगोलशास्त्रियों के लिए चौंकाने वाली है, बल्कि यह हमें ग्रहों के जीवन और उनके अंत को लेकर भी नए सवालों से रूबरू कराती है। यह पूरी घटना 2020 में शुरू हुई, जब वैज्ञानिकों ने 12,000 प्रकाश वर्ष दूर एक तारे को अचानक बहुत तेज चमकते हुए देखा। कुछ समय के लिए वह तारा 100 गुना ज्यादा चमकदार हो गया, लेकिन फिर अचानक धुंधला पड़ गया। वैज्ञानिकों को पहली बार यह आभास हुआ कि शायद यह तारा अपने किसी ग्रह को निगल रहा है। यह पहली बार था जब किसी तारे को इस तरह की गतिविधि करते हुए प्रत्यक्ष रूप से देखा गया। इससे यह समझने का एक अनूठा अवसर मिला कि जब सूर्य जैसे तारे विशाल और लाल हो जाते हैं, तो उनके नजदीक के ग्रहों का क्या होता है।

यूक्रेन के हजारों गांवों पर रूस का कब्जा, बदले जाने लगे सड़क और गलियों के नाम

कीव

रूस के कब्जे वाले यूक्रेनी शहर मारीउपोल में अब रूसी पहचान की छाप तेजी से दिखाई देने लगी है। शहर में रूसी प्रशासन व्यवस्थित तरीके से हजारों यूक्रेनी नागरिकों के घर जब्त कर रहा है, खासकर उन लोगों के जो 2022 की घेराबंदी के दौरान मारे गए या शहर छोड़कर भाग गए थे। रिपोर्ट के अनुसार, कम से कम 5700 घरों की पहचान जब्ती के लिए की गई है, जबकि 3550 और घरों को संभावित जब्ती की सूची में डाला गया है। ये सभी आंकड़े रूसी-नियंत्रित मारीउपोल प्रशासन की वेबसाइट पर जुलाई 2024 के बाद से डाले गए दस्तावेज़ों पर आधारित हैं।

मारीउपोल में न सिर्फ मकान जब्त किए जा रहे हैं, बल्कि सड़कों के नाम भी मास्को के निर्देशों के मुताबिक बदले जा रहे हैं। साथ ही, नए रूसी सैन्य ठिकाने भी बनाए जा रहे हैं। यह सब उस रणनीति का हिस्सा माना जा रहा है, जिसके तहत यूक्रेनी शहरों को 'रूसी रंग 'में रंगा जा रहा है। 2022 में रूस द्वारा किए गए 86 दिन लंबे घेराबंदी में मारीउपोल लगभग पूरी तरह बर्बाद हो गया था। मानवाधिकार संगठन ह्यूमन राइट्स वॉच के अनुसार, उस दौरान कम से कम 8,000 नागरिक मारे गए थे, और करीब 93 प्रतिशत ऊंची इमारतें तबाह हो गई थीं।

रूस दावा कर रहा है कि उसने 70 से ज्यादा नई आवासीय इमारतें बनवा दी हैं, स्थानीय लोगों का कहना है कि शहर में अभी भी भीषण हाउसिंग संकट बना हुआ है। इस बीच, खाली पड़े फ्लैटों में बिना इजाजत लोग रहने लगे हैं और मालिकों को जब्ती का नोटिस भेजा जा रहा है। रूसी अधिकारी इन संपत्तियों को वैध चोरी करार देते हुए स्वीकारा कि जब्ती किए गए घर बिना मालिकों के हैं, लेकिन असलियत यह है कि इनके कानूनी मालिक यूक्रेनी नागरिक हैं, जिन्होंने रूस के कब्जे से बचने के लिए शहर छोड़ा या जिनकी मौत हो गई। कुछ मकानों के कानूनी वारिस अब भी दस्तावेजों के जरिए अपने हक की लड़ाई लड़ रहे हैं।रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने शनिवार को बड़ा ऐलान किया कि वे ईस्टर के मौके पर तीन साल से चल रही यूक्रेन जंग में युद्धविराम का ऐलान कर देंगे। पुतिन की इस बड़ी घोषणा के बीच यूक्रेन में रूस की कथित धोखाधड़ी सामने आई है।

पाकिस्तान-अफगानिस्तान ने एक-दूसरे की धरती से आतंकवाद न होने देने का लिया संकल्प

इस्लामाबाद/काबुल

पाकिस्तान और अफगानिस्तान ने शनिवार को यह संकल्प लिया कि वे अपनी-अपनी धरती का इस्तेमाल एक-दूसरे के खिलाफ किसी भी प्रकार की आतंकी गतिविधियों के लिए नहीं होने देंगे। यह महत्वपूर्ण सहमति पाकिस्तान के उप प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री इशाक डार की एक दिवसीय अफगानिस्तान यात्रा के दौरान बनी।

डार ने काबुल में अफगानिस्तान के कार्यवाहक प्रधानमंत्री मुल्ला मोहम्मद हसन अखुंद और कार्यवाहक विदेश मंत्री आमिर खान मुत्ताकी से मुलाकात की। इस दौरान दोनों देशों के बीच सुरक्षा, व्यापार, आवागमन और सीमा प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा हुई।

प्रेस वार्ता में डार ने कहा कि क्षेत्र में शांति, सुरक्षा और विकास के लिए दोनों देशों को मिलकर काम करना होगा। उन्होंने स्पष्ट किया कि पाकिस्तान अपनी धरती से किसी को अफगानिस्तान के खिलाफ अवैध गतिविधि करने नहीं देगा और अफगानिस्तान से भी ऐसी ही उम्मीद है। उन्होंने कहा कि यदि कोई तत्व एक देश की धरती से दूसरे देश के खिलाफ कार्रवाई करता है, तो दूसरा देश उस पर कार्रवाई कर सकता है। दोनों देशों की जमीन से किसी भी प्रकार की आतंकी गतिविधियों को रोकने के लिए सख्त कदम उठाए जाएंगे। इस बैठक के दौरान मुत्ताकी ने पाकिस्तान में रह रहे अफगान शरणार्थियों की स्थिति पर चिंता जताई और उनकी जबरन वापसी पर आपत्ति दर्ज कराई।

समाज में असमानता तब बढ़ती है जब सत्ता उसे बढ़ने देती है: शोध

लंदन। हाल ही में आई एक रिसर्च ने इस सोच कि अमीरी-गरीबी, ऊंच-नीच और भेदभाव जैसी चीजें इंसानी समाज का हिस्सा हैं, को झूठा साबित कर दिया है। ताजा स्टडी में 10,000 साल पुरानी खुदाई और करीब 1,000 पुरानी बस्तियों का अध्ययन किया गया। अमेरिका, यूरोप, एशिया और मेसोअमेरिका की सभ्यताओं में किए गए इस शोध में वैज्ञानिकों ने 50,000 घरों की बनावट और आकार का विश्लेषण किया और बताया कि असमानता कैसे और कब पनपी। रिसर्च का आधार था घरों का आकार बड़े घर अमीरी के संकेतक माने गए और छोटे घर गरीबी के। इस अंतर को गिनी कोएफिशिएंट नामक मीट्रिक में बदला गया, जो 0 से 1 के बीच होता है। जहां 0 का मतलब सभी के पास बराबर संपत्ति होना है, वहीं 1 का मतलब सारी संपत्ति सिर्फ एक के पास होना। के समय में अमेरिका का स्कोर 0.41 है, जबकि नॉर्वे का 0.27। लेकिन आश्चर्यजनक रूप से हजारों साल पुरानी कई सभ्यताओं में यह स्कोर बेहद कम था मतलब वहां बराबरी ज्यादा थी। रिसर्च का निष्कर्ष चौंकाने वाला था: समाज में असमानता तब बढ़ती है जब सत्ता उसे बढ़ने देती है। जहां लोगों ने मिल-बांट कर संपत्ति और संसाधनों का वितरण सुनिश्चित किया, वहां समानता बनी रही। एथेंस जैसी जगहों पर अमीरों को सार्वजनिक कामों का खर्च उठाने के लिए बाध्य किया जाता था। कई जगह मृतक की संपत्ति गरीबों में बांट दी जाती थी, और कर्ज माफी जैसी व्यवस्थाएं थीं ताकि लोग गुलाम बनकर न मरें। यह धारणा भी गलत साबित हुई कि खेती शुरू होते ही असमानता पनपी। शोध में पाया गया कि कुछ कृषि आधारित समाजों में भी बराबरी बनी रही, जबकि कुछ शिकारी समाजों में भी असमानता देखी गई। असली फर्क इस बात से पड़ा कि समाज में नियम कौन बना रहा था और किस उद्देश्य से।